सूरदास

संक्षिप्त–परिचय

ाप्त परिचय

- जन्म– सन् 1478 ई०।
- जन्म स्थान– रूनकता।
- पिता – रामदास सारस्वत।
- प्रमुख रचनाएँ– सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर सारावली।
- भाषा– ब्रज।
- शैली– मुक्तक शैली के गेयपद।
- विशेष– अष्टछाप के जहाज एवं भक्तिकाल के कवि
- मृत्यु– सन् 1583 ई०।
- साहित्य में स्थान– कृष्णभक्त कवियों में सर्वोच्च स्थान तथा वात्सल्य रस के पुरोधा।

जीवन परिचयः-

महाकवि सूरदास का जन्म 'रूनकता' नामक ग्राम में सन् 1478 ई० में पं० रामदास के घर मे हुआ था। पं० रामदास सारस्वत ब्राह्मण थे। कुछ विद्वान् 'सीही' नामक स्थान को सूरदास का जन्मस्थल मानते हैं।

सूरदासजी जन्मान्ध थे या नहीं, इस सम्बन्ध में भी अनेक मत हैं। कुछ लोगों का कहना है कि बाल मनोवृत्तियों एवं मानव-स्वभाव का जैसा सूक्ष्म और सुन्दर वर्णन सूरदास ने किया है, वैसा कोई जन्मान्ध व्यक्ति कर ही नहीं सकता, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि वे सम्भवतः बाद में अन्धे हुए होंगे।

सूरदास जी श्री वल्लभाचार्य के शिष्य थे। वे मथुरा के गऊघाट पर श्रीनाथ जी के मन्दिर में रहते थे। सूरदास का विवाह भी हुआ था। विरक्त होने से पहले वे अपने परिवार के साथ ही रहा करते थे। पहले वे दीनता के पद गाया करते थे, किन्तु वल्लभाचार्य जी के सम्पर्क में आने के बाद वे कृष्णलीला का गान करने लगे। कहा जाता है कि एक बार मथुरा में सूरदासजी से तुलसी की भेंद हुई थी और धीरे-धीरे दोनों में प्रेम-भाव बढ़ गया था। सूर से प्रभावित होकर ही तुलसीदास ने 'कृष्णगीतावली' की रचना की थी। सूरदाजी की मृत्यु सन् 1583 ई० में गोवर्धन के पास' पारसौली' नामक ग्राम में हुई थी। मृत्यु के समय महाप्रभु वल्लभाचार्य के सुपुत्र विठ्ठलनाथजी वहाँ उपस्थित थे।

प्रमुख रचनाएँ–

कृष्ण भक्ति काव्यधारा के भक्त शिरोमणि सूरदास ने लगभग सवा लाख पदों की रचना की थी। 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' की खोज तथा पुस्तकालय में सुरक्षित नामावली के अनुसार सूरदास के ग्रन्थों की संख्या २५ मानी जाती है, किन्तु उनके तीन ग्रन्थ ही उपलब्ध हुए हैं–

- **सूरसागर**–'सूरसागर' सूरदास की एकमात्र प्रामाणिक कृति है। इसके सवा लाख पदों में से केवल 8–10 हजार पद ही उपलब्ध हो पाए हैं। सम्पूर्ण 'सूरसागर' एक गीतिकाव्य है।
- **सूरसारावली**–यह ग्रन्थ अभी तक विवादास्पद स्थिति में है, 1107 छन्द हैं।
- **साहित्य-लहरी**–''साहित्य-लहरी' में सूरदास के 118 पदों का संग्रह है। इसमें मुख्य रूप से नायिकाओं एवं अलंकारों की विवेचना की गई है। कहीं-कहीं पर श्रीकृष्ण की बाललीला का वर्णन तथा एक-दो स्थलों पर महाभारत की कथा के अंशों की भी झलक है।
- **भाषा-शैली**– सूरदास मुक्तक शैली के गेय पद लिखते थे, भाषा ब्रज थी।